



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 2, February 2022

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.569

 9940 572 462

 6381 907 438

 ijirset@gmail.com

 www.ijirset.com

हड़प्पा मोहनजोदड़ो का ऐतिहासिक पर्यटन

Dr. Bhavna Pareek

BND Govt. Arts College, Chimanpura, India

सार: जैसा कि हमने सामूहिक रूप से हड़प्पा सभ्यता के बारे में सीखा है, यह महसूस करना दिलचस्प है कि इसकी भव्यता की कल्पना करना केवल हमारी कल्पना की उपज नहीं है। वास्तव में, भारतीयों के रूप में, हमें सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा संस्कृति के अवशेषों की खोज करने का अनूठा विशेषाधिकार प्राप्त है, जो हमारी समृद्ध और प्राचीन विरासत का प्रतीक है। यह सभ्यता, दुनिया की सबसे पुरानी शहरी संस्कृतियों में से एक है, जो 2500 से 1700 ईसा पूर्व तक मेसोपोटामिया और मिस्र की भव्य सभ्यताओं के समानांतर फली-फूली।

I. परिचय

आज, भारत में इस सहस्राब्दी पुरानी सभ्यता से संबंधित 100 से अधिक स्थल हैं जो विभिन्न राज्यों में फैले हुए हैं। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, बनावली और धोलावीरा चार मुख्य हड़प्पा स्थल हैं। यह सभ्यता कभी उत्तरपूर्वी अफ़गानिस्तान से गुजरात और पाकिस्तान के बलूचिस्तान से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक फैली हुई थी। जबकि ऐतिहासिक विभाजन ने पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में कुछ प्रमुख स्थलों को रखा है, इस सभ्यता की भव्यता का सार भारतीय परिदृश्य में, विशेष रूप से गुजरात में गहराई से समाया हुआ है। यह अब एक खुली किताब है जिसे अहमदाबाद में कैब बुक करके पढ़ा और खोजा जा सकता है, जो उस युग की झलक पेश करती है जिसे कई लोगों ने केवल इतिहास की किताबों में ही देखा है। भारत में सिंधु घाटी सभ्यता के माध्यम से सिंधु घाटी सभ्यता की सड़क यात्रा इतिहास के परिदृश्यों के माध्यम से एक यात्रा है और एक बीते युग का द्वार है, जहाँ कल्पना 6000 साल पुरानी सभ्यता के अवशेषों से मिलती है। जब आप इन प्राचीन स्थलों से गुजरते हैं, तो हड़प्पा के लोगों के जीवन, विश्वासों और रीति-रिवाजों के बारे में स्वाभाविक रूप से सवाल उठते हैं। उनके दैनिक जीवन में क्या शामिल था? उनके समाज को कौन सी मान्यताएँ और सामाजिक संरचनाएँ नियंत्रित करती थीं? इस तरह के सवाल यात्रा को एक बेहद आकर्षक अनुभव बनाते हैं, जिससे आप लगभग उनकी दुनिया में टेलीपोर्ट होने जैसा महसूस करते हैं। हमारा मानना है कि सिंधु घाटी सभ्यता की यह सड़क यात्रा महज एक छुट्टी से कहीं बढ़कर है; यह हमारे सामूहिक अतीत के एक हिस्से से जुड़ने और एक प्राचीन सभ्यता के पदचिह्नों पर चलने का अवसर है, जिसने आज हम जो कुछ भी जानते हैं, उसे आकार दिया है। आपको उन्हीं भूमियों से होकर यात्रा करने का मौका मिलता है, जहाँ हड़प्पा के लोग, अपनी उन्नत शहरी योजना, कुशल धातु विज्ञान और जटिल मुहर नक्काशी के लिए जाने जाते थे। यह एक ऐसी संस्कृति के चमत्कारों को देखने और अनुभव करने का मौका है, जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है, जो मानव सभ्यता के इतिहास और विकास पर एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करती है। सिंधु घाटी सभ्यता की खोज करने के लिए सिंधु घाटी सभ्यता की सड़क यात्रा पर निकलने के लिए गुजरात एक आदर्श राज्य है, जो इस प्राचीन समाज के बारे में बेजोड़ अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जब आप गुजरात के बारे में सोचते हैं, तो कई छवियाँ मन में उभर सकती हैं: अहमदाबाद की चहल-पहल भरी सड़कें, प्रसिद्ध हस्तियों की वंशावली, अरब सागर के किनारे शांत समुद्र तट, प्रतिष्ठित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी और शायद इसके कई मंदिरों की पवित्रता। फिर भी, इस क्षेत्र का एक गहरा, अधिक प्राचीन पहलू है। यह आम युग से दो सहस्राब्दी पहले के समय में निहित है। एक ऐसे युग के दौरान जब दुनिया के कई हिस्से अभी भी पाषाण युग में थे, वर्तमान गुजरात के कुछ क्षेत्र समृद्ध और उन्नत सभ्यताओं का घर थे। गुजरात में इस प्राचीन युग के 200 से अधिक स्थल हैं, जो मुख्य रूप से तीन महत्वपूर्ण स्थलों के आसपास केंद्रित हैं: लोथल, सुरकोटदा और धोलावीरा। सौराष्ट्र और कच्छ के प्रायद्वीपों और गुजरात की मुख्य भूमि में 1954 और 1958 के बीच किए गए व्यापक सर्वेक्षणों ने हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न चरणों को उजागर किया, जिससे सिंधु साम्राज्य का एक नया अध्याय सामने आया। लगभग 2500 ईसा पूर्व, हड़प्पावासियों ने कच्छ में घुसपैठ करना शुरू कर दिया, और उल्लेखनीय गति और शक्ति के साथ बस्तियाँ स्थापित कीं। आज तक, अकेले कच्छ में 60 सिंधु बस्तियों की पहचान की गई है। कच्छ और गुजरात के कुछ हिस्सों से मिले साक्ष्य बताते हैं कि हड़प्पावासी अपनी पूरी तरह से विकसित संस्कृति को इन क्षेत्रों में लेकर आए, जो उनकी सभ्यता के अंतिम पतन तक फलती-फूलती रही। इसके कारण कच्छ से गुजरात के भीतरी इलाकों और संभवतः सौराष्ट्र में महत्वपूर्ण प्रवास हुआ। इतिहास के शौकीनों और प्राचीन सभ्यताओं के उत्साही लोगों के लिए, गुजरात में यह सिंधु घाटी की सड़क यात्रा एक अमूल्य यात्रा है। अगर आप इतिहास की गहराई और प्राचीन समाजों की पेचीदगियों को जानने के लिए उत्सुक हैं, तो गुजरात में सिंधु घाटी की यात्रा आपके अगले रोमांच के लिए एक आदर्श यात्रा कार्यक्रम है।[1,2,3]

अहमदाबाद से कार किराए पर लेकर अपनी सिंधु घाटी सभ्यता की सड़क यात्रा शुरू करें, जो शहर से मात्र 80 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है, और 4500 साल पहले लोथल के प्राचीन स्थल पर वापस जाएँ। सिंधु घाटी सभ्यता की यह महत्वपूर्ण बस्ती, जो वर्तमान

पाकिस्तान तक फैली हुई थी, एक पुरातात्विक रत्न के रूप में खड़ी है। 'लोथल' नाम का गुजराती में अर्थ है 'मृतकों का टीला'। ऐसा माना जाता है कि यह 'लोथ' और 'थल' (स्थल) से बना है, जो इस स्थल को ऐतिहासिक महत्व प्रदान करता है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त करने के कगार पर है। लोथल में दुनिया की सबसे पुरानी ज्ञात कृत्रिम गोदी है, जिसे साबरमती नदी के पुराने मार्ग से सरलता से जोड़ा गया है, जो इसे एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल बनाता है।

लोथल के खंडहरों की खोज - प्राचीन शहरी जीवन की एक झलक

जैसे-जैसे आप लोथल की गहराई में उतरेंगे, आपको एक्रोपोलिस, सावधानीपूर्वक नियोजित निचला शहर दिखाई देगा। आपको एक मनका कारखाना, गोदाम और एक उन्नत जल निकासी प्रणाली भी मिलेगी, जो हड़प्पावासियों के परिष्कृत शहरी नियोजन कौशल की गवाही देती है। नहरों और गोदी की उपस्थिति प्राचीन व्यापार नेटवर्क में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का संकेत देती है। कलाकृतियाँ मेसोपोटामिया, मिस्र और फारस जैसी दूर की सभ्यताओं के साथ वाणिज्यिक संबंधों का सुझाव देती हैं।

पश्चिमी भारत में सबसे सुलभ हड़प्पा-युगीन स्थल के रूप में, भोगवा नदी के किनारे स्थित लोथल। यह साबरमती की एक सहायक नदी है, जो एक समृद्ध बंदरगाह शहर के रूप में उभरी। मोहनजोदड़ो की तुलना में अपने छोटे आकार के बावजूद, सात हेक्टेयर का यह स्थल हड़प्पा संस्कृति का व्यापक दृश्य प्रस्तुत करता है। शहर की मजबूत दीवारें संभवतः ज्वारीय बाढ़ का सामना करने के लिए डिज़ाइन की गई थीं। ऊपरी और निचले शहर क्षेत्रों में इसका विभाजन शहरी नियोजन के उच्च स्तर को दर्शाता है।

लोथल का पुरातत्व संग्रहालय - प्राचीन कलाकृतियों का खजाना

साइट के पास, पुरातत्व संग्रहालय, जो सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक (शुक्रवार को बंद) संचालित होता है, ऐतिहासिक कलाकृतियों का एक आश्रय स्थल है। इसमें आभूषण, मिट्टी के बर्तन, मुहरें और धार्मिक प्रतीकों जैसी कई वस्तुएँ हैं। इसमें दैनिक उपयोग की वस्तुएँ भी शामिल हैं, जो आगंतुकों को प्राचीन दुनिया से एक ठोस संबंध प्रदान करती हैं। यहाँ की खुदाई से आधुनिक भारत के पुरातत्व में सबसे अधिक पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

दूरी - 78.2 किमी

समय लगा - 1 घंटा 27 मिनट

लोथल से रंगपुर तक - हड़प्पा की विरासत का पता लगाना

लोथल के प्राचीन चमत्कारों को देखने के बाद, इस ऐतिहासिक सड़क यात्रा पर आपका अगला गंतव्य रंगपुर है। यह अहमदाबाद जिले के लिमडी तालुका में स्थित है। रंगपुर स्वतंत्रता के बाद फिर से खुदाई की जाने वाली पहली साइट है, जिसे हड़प्पा की चौकी माना जाता है। यह साइट क्षेत्र के हड़प्पा प्रवास पैटर्न और बस्तियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। रंगपुर में की गई खोजों से पता चलता है कि हड़प्पा के लोग अपनी संस्कृति और जीवनशैली को गुजरात में कैसे लेकर आए। यह यह भी दर्शाता है कि कैसे इसने क्षेत्र के इतिहास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, इससे पहले कि उनकी सभ्यता का पतन हो जाए, जिससे बड़े पैमाने पर प्रवास हुआ।

रंगपुर का पुरातात्विक महत्व - सांस्कृतिक कलाकृतियों का एक मोज़ेक

इसमें हड़प्पा-पूर्व के लोगों के लिए जिम्मेदार ठहराए गए गुच्छे और पीले और हरे रंग के बर्तनों के साक्ष्य मिले हैं, जो इस क्षेत्र में निरंतर निवास और सांस्कृतिक विकास का संकेत देते हैं। अब तक छह अलग-अलग प्रकार के मिट्टी के बर्तनों की खुदाई की गई है, जो इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों के कलात्मक और उपयोगितावादी पहलुओं की एक आकर्षक झलक पेश करते हैं।

दूरी - 44.1 किमी

समय लगा - 51 मिनट

रंगपुर से सुरकोटदा तक - एक हड़प्पाकालीन गढ़ का खुलासा

आपकी ऐतिहासिक सड़क यात्रा का अगला चरण आपको रंगपुर से सुरकोटदा तक ले जाएगा, जो 1964 में खोजा गया स्थल है। सुरकोटदा, हड़प्पा कथा का एक दिलचस्प अध्याय है, जो सभ्यता की वास्तुकला और सामाजिक उन्नति के बारे में अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

सुरकोटदा - हड़प्पा की लचीलापन और योजना का प्रमाण

सुरकोटदा पहुँचने पर, आप पाएंगे कि यह प्राचीन स्थल, जिसके बारे में माना जाता है कि यह 2300 ईसा पूर्व के आसपास बसा था, एक किलेबंद गढ़ और एक आवासीय परिसर समेटे हुए है, जिसे मिट्टी की ईंट, मिट्टी के ढेर और मलबे का उपयोग करके बनाया गया है। उल्लेखनीय रूप से, यह स्थल 400 वर्षों तक लगातार आबाद रहा, जो इस क्षेत्र में हड़प्पावासियों की स्थिर और स्थायी उपस्थिति को दर्शाता है। अपने अपेक्षाकृत छोटे आकार के बावजूद, सुरकोटदा शहरी नियोजन और स्थापत्य परिष्कार के मामले में कालीबंगन और लोथल जैसे अन्य प्रमुख हड़प्पा स्थलों के बराबर है।

सुरकोटदा का सामरिक महत्व और पुरातात्विक खोजें

कई विद्वानों का मानना है कि सुरकोटदा का स्थान सिंध से हड़प्पावासियों के पूर्व की ओर पलायन को नियंत्रित करने के लिए रणनीतिक रूप से चुना गया था, जो संभवतः एक क्षेत्रीय राजधानी या गैरीसन शहर के रूप में काम करता था। उत्खनन से कई आकर्षक कलाकृतियाँ मिली हैं, जिनमें सिंधु वर्णमाला से सजे चित्रित मिट्टी के बर्तन, तांबे की वस्तुएँ और एक विशिष्ट हड़प्पा मुहर शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, साइट पर तांबे के मोतियों और चूड़ियों के साथ-साथ टेराकोटा के खिलौने, टैंक और मोतियों के भंडार पाए गए हैं।

सुरकोटदा की अभूतपूर्व खोज - प्राचीन घोड़ों के साक्ष्य

सुरकोटदा में सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक 2000 ईसा पूर्व के घोड़े के अवशेषों की खोज है। इस खोज को हड़प्पा सभ्यता को समझने में महत्वपूर्ण माना जाता है, जो उनके पालतू बनाने की प्रथाओं और व्यापार नेटवर्क पर प्रकाश डालता है।

दूरी - 204.1 किमी

समय लगा - 4 घंटे 8 मिनट

सुरकोटदा से धोलावीरा - सबसे बड़े सिंधु घाटी स्थलों में से एक

सुरकोटदा की साइट से निकलकर, समय के इस सफ़र में आपकी अगली मंज़िल है धोलावीरा, जो सिंधु घाटी के पाँच सबसे बड़े स्थलों में से एक के रूप में प्रसिद्ध है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, पाकिस्तान में घारो भीरो और भारत में राखीगढ़ी के साथ, धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता के विशाल विस्तार और परिष्कार का प्रमाण है।

धोलावीरा - प्राचीन शहरी नियोजन में एक मास्टरक्लास

कच्छ के खादिर द्वीप पर स्थित और स्थानीय रूप से कोटडा के नाम से जाना जाने वाला धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता की शहरी नियोजन विशेषताओं के उल्लेखनीय साक्ष्य प्रदर्शित करता है। पुरातत्वविदों ने इस बस्ती को तीन अलग-अलग खंडों में विभाजित किया है: गढ़, मध्य शहर और निचला शहर। शहर खुद उत्तर से दक्षिण तक लगभग 600 मीटर और पूर्व से पश्चिम तक 775 मीटर तक फैला हुआ है, जो एक विशाल किलेबंदी से घिरा हुआ है जो जलाशयों की एक श्रृंखला को घेरता है।

धोलावीरा के रहस्य - दुनिया के सबसे पुराने साइनबोर्ड का स्थल

धोलावीरा के सबसे दिलचस्प पहलुओं में से एक उत्तरी द्वार पर दस प्रतीकों की उपस्थिति है, जिन्हें धोलावीरा साइनबोर्ड के रूप में जाना जाता है। यह कलाकृति संभवतः दुनिया के सबसे पुराने ज्ञात साइनबोर्ड का प्रतिनिधित्व कर सकती है। इसके अतिरिक्त, धोलावीरा में कई अत्येष्टि संरचनाओं की खोज सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों की सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करती है।

धोलावीरा का अस्थायी परित्याग और वापसी

धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता के इतिहास में एक अनूठा अध्याय प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह एक ऐसा स्थल था जिसे अस्थायी रूप से परित्यक्त किया गया था। गुजरात पर्यटन के अनुसार, मूल निवासी अंततः वापस लौट आए, लेकिन उनके जीवन के तरीके में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। उन्होंने एक गैर-शहरी संस्कृति की स्थापना की, अपनी एक बार की भव्य सभ्यता की जटिलताओं पर सादगी को चुना। पुरातात्विक साक्ष्य परित्याग की अवधि का सुझाव देते हैं, जिसके बाद हड़प्पा चरण के अंत में वापसी हुई, जिसमें मिट्टी के बर्तनों की शैलियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। धोलावीरा के इतिहास का यह चरण जलवायु परिवर्तनों द्वारा संचालित प्रवास और सांस्कृतिक परिवर्तन के एक बड़े पैटर्न का संकेत देता है, जिसमें गंभीर शुष्कता और सरस्वती जैसी नदियों का सूखना शामिल है।

सूखे जैसी स्थिति ने गंगा घाटी, दक्षिण गुजरात और महाराष्ट्र की ओर पलायन को बढ़ावा दिया। धोलावीरा का पतन भी मेसोपोटामिया के पतन के साथ हुआ, जो प्राचीन अर्थव्यवस्थाओं के परस्पर संबंध का संकेत देता है। इस प्रमुख बाजार के पतन का हड़प्पा के स्थानीय उद्योगों पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसमें खनन, विनिर्माण और व्यापार शामिल हैं।

II. विचार-विमर्श

गोला धोरो में महत्वपूर्ण खोजों में सीप, अर्ध-कीमती पत्थर, पत्थर के मोती, फ़ाइनेस और तांबे की कलाकृतियाँ जैसी शिल्प वस्तुएँ शामिल हैं। उल्लेखनीय रूप से, पुरातत्वविदों ने अन्य हड़प्पा मुहरों के साथ-साथ एक खोखली जगह, संभवतः एक कंटेनर, के साथ एक अनूठी गेंडा मुहर का पता लगाया। इनमें से छह मुहरों पर शिलालेख और गेंडा चित्रण हैं, जो सिंधु घाटी सभ्यता के बड़े शहरी केंद्रों में आम थे और व्यापार में उपयोग किए जाते थे। मुहरों में से एक में एक गहरी, आयताकार गुहा है, जो किसी अन्य हड़प्पा स्थल पर दर्ज नहीं की गई एक अनूठी खोज है।

अपने छोटे क्षेत्र के बावजूद, गोला धोरो में 5.20 मीटर चौड़ी दीवार है, जिसका निर्माण तीन क्रमिक चरणों में किया गया था। यह बस्ती शिल्प और व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र थी, जो शैल चूड़ियों, अर्ध-कीमती पत्थर के मोतियों, तांबे और फ़ाइनेस वस्तुओं के उत्पादन में माहिर थी। मोतियों का निर्माण मुख्य रूप से दीवार वाले क्षेत्र के बाहर किया जाता था, जबकि फ़ाइनेस वस्तुओं का उत्पादन इसके भीतर किया जाता था। बिना दीवार वाले शहर और दीवार वाले गढ़ की विशेषता वाला यह लेआउट बताता है कि गोला धोरो व्यापार और उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

ओमान के साथ विदेशी व्यापार में गोला धोरो की भूमिका [4,5,6]

गोला धोरो की व्यापार में भूमिका को और अधिक रेखांकित करते हुए, पुरातत्वविदों को बड़े काले बर्तन भंडारण बर्तन मिले, जो विदेशी व्यापार में भागीदारी का संकेत देते हैं। इन बर्तनों का उपयोग संभवतः मगन (वर्तमान ओमान) में माल ले जाने के लिए किया जाता था, जो बस्ती के व्यापक व्यापार नेटवर्क का संकेत देता है।

दूरी – 60.3 किमी

समय लगा – 1 घंटा 21 मिनट

गोला धोरो से अहमदाबाद तक - खंडहर से आधुनिक वैभव तक

गोला धोरो से आगे बढ़ते हुए, आप अहमदाबाद वापस आ सकते हैं, जहाँ एक खूबसूरत यात्रा आपका इंतज़ार कर रही है। ऐतिहासिक खोज में खुद को डुबोने और प्राचीन जीवन शैली की झलक पाने के बाद, अहमदाबाद अपने चमत्कारों को खोजने का मौका देता है। अपनी यात्रा को बेहतर बनाने के लिए, इस व्यापक अहमदाबाद यात्रा गाइड को देखें जो अहमदाबाद के अजूबों की एक संपूर्ण यात्रा सुनिश्चित करता है।

गुजरात में सिंधु घाटी सभ्यता की सड़क यात्रा की योजना कैसे बनाएं?

गुजरात में सिंधु घाटी सभ्यता की इस आकर्षक सड़क यात्रा पर निकलते समय, प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के मार्ग का पता लगाते हुए, आप खुद को एक ऐसी यात्रा में डुबो लेंगे जो सिर्फ़ मीलों की नहीं बल्कि सदियों के इतिहास से होकर गुज़रने की यात्रा है। लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा, धोलावीरा और गोला धोरो जैसी प्रतिष्ठित जगहों को कवर करते हुए, आप दुनिया की सबसे पुरानी शहरी सभ्यताओं में से एक के चमत्कारों से रूबरू होंगे। पूरी यात्रा पूरी करने में आपको लगभग 10 घंटे और 19 मिनट लगेंगे, लेकिन यह अनुभव जीवन भर आपके साथ रहेगा। एक शांत और आरामदायक यात्रा के लिए, अहमदाबाद में ड्राइवर वाली सवारी बुक करने पर विचार करें, और अपने रोमांच को दो दिनों में फैलाएँ, जिससे आप अपनी गति से प्रत्येक जगह को देख पाएँगे।

यह यात्रा भारत की समृद्ध पुरातात्विक विरासत की एक झलक मात्र नहीं प्रदान करती है। यह एक उन्नत और परिष्कृत संस्कृति की स्थायी विरासत का द्वार है। अपनी यात्रा को और भी यादगार बनाने के लिए, अपनी सिंधु घाटी सभ्यता की सड़क यात्रा का समय कच्छ के रण उत्सव के आसपास तय करने पर विचार करें। आप कच्छ के रण उत्सव से संबंधित सभी विवरण यहां पा सकते हैं। यह हर साल नवंबर के अंत से फरवरी की शुरुआत तक मनाया जाता है। रण उत्सव सफेद नमक के रेगिस्तान की शानदार पृष्ठभूमि में स्थानीय संस्कृति, शिल्प और परंपराओं का जीवंत प्रदर्शन है। उत्सव में डूब जाएं, स्थानीय व्यंजनों का आनंद लें और गुजराती आतिथ्य की गर्मजोशी का अनुभव करें। प्राचीन हड़प्पा स्थलों की अपनी खोज को रण उत्सव के समकालीन सांस्कृतिक उत्सव के साथ जोड़कर, आप न केवल स्थानों की यात्रा कर रहे

राजस्थान से जम्मू तक – अन्य उल्लेखनीय सिंधु घाटी स्थल

गुजरात के प्रसिद्ध स्थलों के अलावा, भारत में कई अन्य सिंधु घाटी सभ्यता स्थल भी इस प्राचीन सभ्यता के बारे में समान रूप से आकर्षक जानकारी प्रदान करते हैं।

बीकानेर से लगभग 210 किलोमीटर दूर स्थित कालीबंगन घग्गर नदी के तट पर बसा हुआ है। यह 3500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व तक प्राचीन सरस्वती नदी का अवशेष है। 1900 के दशक में खोजे गए इस स्थल पर दुनिया का पहला जुता हुआ खेत और अनुष्ठानिक अग्नि वेदियाँ मिली हैं। पास के कालीबंगन संग्रहालय में खुदाई के दौरान मिले मिट्टी के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं।

राखीगढ़ी, हरियाणा

यह स्थल दिल्ली से लगभग 150 किलोमीटर दूर हरियाणा में स्थित है। यहाँ खोजी गई सिंधु घाटी की सबसे बड़ी बस्तियों में से एक राखीगढ़ी का इतिहास 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक है। 1963 में शुरू हुई खुदाई में परिष्कृत सड़कों और सीवेज सिस्टम के साथ एक सुनियोजित शहर का पता चला। कई टेराकोटा मूर्तियाँ, कांस्य खिलौने और अन्य कलाकृतियाँ मिलीं, जो शहर की शहरी शक्ति को उजागर करती हैं।

आलमगीरपुर, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित आलमगीरपुर या परसाराम-का-खेड़ा, 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में रहने वाली हड़प्पा-बारा काल की बस्ती थी। यहाँ की प्रमुख खोजों में छत की टाइलें, कप, फूलदान, मोती, गाड़ियाँ, एक कूबड़ वाला बैल और एक टूटी हुई तांबे की ब्लेड जैसी चीनी मिट्टी की वस्तुएँ शामिल हैं, जो प्राचीन काल में दैनिक जीवन की झलक पेश करती हैं। आलमगीरपुर के समृद्ध इतिहास को जानने के लिए, मेरठ से सवारी बुक करें और साइट के कई अवशेषों का पता लगाएँ।

बालू, हरियाणा

इस छोटी सी किलेबंद बस्ती में पौधों के अवशेषों का खजाना मिला है, जो उस समय की कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी देता है। खोजों में जौ, गेहूँ, चावल, चना, हरा चना, मटर, तिल, खरबूजा, तरबूज, अंगूर, खजूर और लहसुन शामिल हैं। उल्लेखनीय रूप से, बालू से लहसुन के अवशेषों को दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में इसके उपयोग के सबसे शुरुआती सबूत के रूप में पहचाना जाता है, जो इसे सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक बनाता है।

फरमाणा, हरियाणा

परिपक्व हड़प्पा काल (2500-2000 ईसा पूर्व) की 70 कब्रों वाले अपने दफन स्थल के लिए महत्वपूर्ण, फरमाणा खास ने हड़प्पा जीवन के जटिल विवरणों को उजागर किया है। उत्खनन में टेराकोटा खिलौने, तांबे की चूड़ियाँ, सोने के आभूषण और प्रचुर मात्रा में मिट्टी के बर्तन मिले हैं। फरमाणा में एक असाधारण खोज एक अर्धे उम्र की महिला का कंकाल है। इसे तीन शंख की चूड़ियों, दो तांबे की चूड़ियों, तांबे की बालियों, मोतियों और पैरों के आभूषणों से सजाया गया था।

उसके दफन की वस्तुओं की समृद्धि हड़प्पा समाज में उसकी समृद्ध स्थिति को दर्शाती है। यह उस समय के सामाजिक पदानुक्रम और सांस्कृतिक मानदंडों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसके अलावा, अंतर-क्षेत्रीय विवाहों के साक्ष्य भी दिलचस्प हैं, एक ऐसी प्रथा जिसे हड़प्पा के लोग व्यापार के उद्देश्य से अपनाते थे। शंख से बनी चूड़ियों और मोतियों की खोज। ये सामग्रियाँ गुजरात की मूल निवासी हैं, जो लंबी दूरी के व्यापारिक संबंधों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का संकेत देती हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित, बरोर ने पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पाकालीन मिट्टी के बर्तनों का खुलासा किया। इसमें टेराकोटा केक, चूड़ियाँ और आभूषणों के साथ एक मानव कंकाल भी शामिल है। उल्लेखनीय खोजों में लाल तरल बनाने वाले दो पत्थर और मोतियों से भरा एक घड़ा शामिल है, जो साइट की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर जोर देता है। [7,8,9]

बेट द्वारका, गुजरात

1980 के दशक में बेट द्वारका में की गई जांच में हड़प्पा काल के अंतिम समय की कलाकृतियाँ मिली थीं। खोज में 1500 ईसा पूर्व की सुरक्षा दीवार, हड़प्पा की मुहर, तांबे के बने साँचे और तांबे के मछली पकड़ने के हुक शामिल हैं। वे रोमनों के साथ ऐतिहासिक व्यापारिक संबंधों की ओर इशारा करते हैं। इसके अतिरिक्त, बेट द्वारका एक डूबे हुए खोए हुए शहर के रहस्य से जुड़ा हुआ है, जिसके बारे में आप यहाँ क्लिक करके पढ़ सकते हैं।

भगतराव, गुजरात

एक छोटे सिंधु घाटी स्थल के रूप में, भगतराव ने सीसे के टुकड़े, लोहे से भरपूर मिट्टी के नमूने, पत्थर के मोती और चमकदार बर्तन उत्पादन के साक्ष्य प्रकट किए। यह संभवतः लोथल के समकालीन व्यापारिक बंदरगाह के रूप में कार्य करता था।

देसलपार गुंथली, कच्छ जिला, गुजरात

कच्छ जिले के नखत्राणा तालुका में स्थित इस गांव और स्थल पर नियमित हड़प्पाकालीन मिट्टी के बर्तन मिले हैं। इसमें विभिन्न सामग्रियों से बनी मुहरें और मोहनजोदड़ो में पाए जाने वाले 'चमकीले बर्तन' भी पाए गए हैं। यह हड़प्पा सांस्कृतिक क्षेत्र में इस स्थल के महत्व का संकेत देता है।

मांडा, जम्मू

मांडा में खुदाई से पूर्व-हड़प्पा काल से लेकर कुषाण काल तक के कब्रों का क्रम पता चला। कलाकृतियों में हड़प्पा के लाल बर्तन, तांबे के सर्पिल, हड्डियों के तीर के सिरे और टेराकोटा की चूड़ियाँ शामिल हैं, जो इस स्थल पर मानव गतिविधि के लंबे इतिहास को दर्शाती हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रत्येक स्थान जहाँ सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष मौजूद हैं, इस प्राचीन संस्कृति पर एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह इसके व्यापक प्रभाव और स्थायी विरासत के बारे में हमारी समझ को बढ़ाता है। उन्नत सिंधु घाटी सभ्यता नगर नियोजन और हड़प्पा सभ्यता नगर नियोजन, उनके ग्रिड जैसे सड़क लेआउट और जटिल जल निकासी प्रणालियों के साथ, समकालीन शहरी डिजाइन में अभी भी प्रासंगिक सिद्धांतों के शुरुआती उदाहरण हैं।

जबकि सिंधु घाटी सभ्यता का सटीक धर्म एक दिलचस्प विषय बना हुआ है, मानकीकृत वजन और माप जैसे क्षेत्रों में उनका योगदान निष्पक्ष वाणिज्य के लिए मौलिक था, एक अवधारणा जो आज के वैश्विक बाजार में महत्वपूर्ण है। सिंधु घाटी सभ्यता के शहर जल प्रबंधन में उल्लेखनीय नवाचारों को प्रदर्शित करते हैं। इसमें आधुनिक संधारणीय संसाधन प्रबंधन प्रथाओं के समानांतर कुशलतापूर्वक डिज़ाइन किए गए कुएँ और जलाशय भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सिंधु घाटी सभ्यता की कला और शिल्प, उनके मिट्टी के बर्तनों, आभूषणों और शहरी संरचनाओं में परिलक्षित होते हैं, जो इस युग के समृद्ध सांस्कृतिक ताने-बाने की झलक पेश करते हैं, जिसे कई लोग भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल मानते हैं।

इन ऐतिहासिक स्थलों की सिंधु घाटी सभ्यता की सड़क यात्रा पर निकलना न केवल अतीत में वापस जाने का अनुभव प्रदान करता है, बल्कि शानदार फोटोग्राफी के अवसर और अविस्मरणीय अनुभव भी प्रदान करता है। एक सहज और परेशानी मुक्त अन्वेषण के लिए, सिंधु घाटी सभ्यता की अपनी सड़क यात्रा को आसानी से नेविगेट करने के लिए सवारी ऐप डाउनलोड करें। जैसे-जैसे आप इन प्राचीन स्थलों की यात्रा करेंगे, आप मानव इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय से जुड़ेंगे। आप दुनिया के सांस्कृतिक और तकनीकी विकास के बारे में अपनी समझ को भी समृद्ध करेंगे, जिससे अतीत और वर्तमान के बीच एक पुल का निर्माण होगा।

III. परिणाम

मोहनजोदड़ो को दक्षिण एशिया और सिंधु सभ्यता के सबसे महत्वपूर्ण प्रारंभिक शहरों में से एक माना जाता है और फिर भी अधिकांश प्रकाशन इस महत्वपूर्ण स्थल के बारे में सरसरी तौर पर ही जानकारी देते हैं। इस

स्थल के नाम की कई अलग-अलग वर्तनी हैं और इस लेख में हमने सबसे आम रूप, मोहनजोदड़ो (मोहन या मोहन का टीला) का उपयोग करना चुना है, हालांकि अन्य वर्तनी भी समान रूप से मान्य हैं: मोहनजोदड़ो (मोहन का टीला = कृष्ण), मोहनजोदड़ो (मृतकों का टीला), मोहनजोदड़ो, मोहनजोदड़ो या यहाँ तक कि मोहन-जोदड़ो। कई प्रकाशन अभी भी बताते हैं कि मोहनजोदड़ो भारत में स्थित है (संभवतः प्राचीन भारत का संदर्भ देते हुए), लेकिन 1947 में पाकिस्तान के निर्माण के बाद से, यह स्थल पाकिस्तान सरकार के पुरातत्व और संग्रहालय विभाग के संरक्षण में है।

खोज और प्रमुख उत्खनन

मोहनजोदड़ो की खोज 1922 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एक अधिकारी आरडी बनर्जी ने की थी, जो हड़प्पा में प्रमुख खुदाई शुरू होने के दो साल बाद उत्तर में लगभग 590 किलोमीटर दूर था। 1930 के दशक में जॉन मार्शल, केएन दीक्षित, अर्नेस्ट मैके और कई अन्य निर्देशकों के निर्देशन में इस स्थल पर बड़े पैमाने पर खुदाई की गई थी।

हालाँकि पहले की खुदाई स्टेटीग्राफ़िक दृष्टिकोण या आधुनिक पुरातत्वविदों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रिकॉर्डिंग तकनीकों के प्रकार का उपयोग करके नहीं की गई थी, लेकिन उन्होंने बहुत सारी जानकारी प्रदान की जिसका आज भी विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जा रहा है (मोहनजोदड़ो ग्रंथ सूची देखें)।

इस स्थल पर आखिरी बड़ी खुदाई परियोजना 1964-65 में स्वर्गीय डॉ. जीएफ डेल्स द्वारा की गई थी, जिसके बाद मौसम से उजागर संरचनाओं के संरक्षण की समस्याओं के कारण खुदाई पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

1964-65 से इस स्थल पर केवल बचाव उत्खनन, सतह सर्वेक्षण और संरक्षण परियोजनाओं की अनुमति दी गई है। इनमें से अधिकांश बचाव कार्य और संरक्षण परियोजनाएँ पाकिस्तानी पुरातत्वविदों और संरक्षकों द्वारा संचालित की गई हैं।

1980 के दशक में विस्तृत सतह सर्वेक्षण, सतह की खुरचनी और जांच के साथ व्यापक वास्तुकला दस्तावेजीकरण का काम जर्मन और इतालवी सर्वेक्षण टीमों द्वारा किया गया था, जिसका नेतृत्व डॉ. माइकल जेनसन (RWTH) और डॉ. मौरिज़ियो टोसी (IsMEO) कर रहे थे। साइट पर सबसे व्यापक हालिया काम पुरातत्व और संग्रहालय विभाग के साथ-साथ विभिन्न विदेशी सलाहकारों के सहयोग से यूनेस्को द्वारा किए गए स्थायी संरचनाओं के संरक्षण के प्रयासों पर केंद्रित है। सबसे हालिया बचाव उत्खनन और संरक्षण का विवरण अस्पष्ट पत्रिकाओं या रिपोर्टों में पाया जाता है जो जनता के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन उन्हें खोजने में रुचि रखने वालों के लिए ग्रंथ सूची में सूचीबद्ध हैं।

मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक अवशेष

तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में पूरी तरह से कच्ची ईंटों से निर्मित विशाल शहर मोहनजोदड़ो के खंडहर सिंधु घाटी में स्थित हैं। ऊंचे तटबंधों पर बसा एक्रोपोलिस, प्राचीर और निचला शहर, जो सख्त नियमों के अनुसार बनाया गया है, शहर नियोजन की प्रारंभिक प्रणाली का सबूत देते हैं।^[10,11,12]

मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक खंडहर दक्षिण एशिया में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित शहरी बस्ती हैं, जो तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में बनी थीं, और शहरीकरण के बाद के विकास पर उनका काफी प्रभाव पड़ा। पुरातात्विक खंडहर सिंधु नदी के दाहिने किनारे पर, कराची से 510 किमी उत्तर-पूर्व में और पाकिस्तान के सिंध प्रांत में लरकाना जिले के लरकाना शहर से 28 किमी दूर स्थित हैं। यह संपत्ति सिंधु सभ्यता के महानगर का प्रतिनिधित्व करती है, जो सिंधु घाटी में 2,500-1,500 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली और दुनिया की तीन महान प्राचीन सभ्यताओं में से एक है।

1922 में मोहनजोदड़ो की खोज से इसके निवासियों के रीति-रिवाजों, कला, धर्म और प्रशासनिक क्षमताओं के साक्ष्य सामने आए। अच्छी तरह से नियोजित शहर, जो ज्यादातर पकी हुई ईंटों से बना था और जिसमें सार्वजनिक स्नानघर, पुजारियों का एक कॉलेज, एक विस्तृत जल निकासी प्रणाली, कुएं, मल-मूत्र के निपटान के लिए सोखने वाले गड्ढे और एक बड़ा अन्न भंडार था, इस बात की गवाही देता है कि यह बहुत महत्व का महानगर था, जिसमें एक सुव्यवस्थित नागरिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था थी।

मोहनजोदड़ो में दो क्षेत्र शामिल हैं: पश्चिम में एक गढ़ क्षेत्र जहाँ दूसरी शताब्दी ई. में मोहनजोदड़ो के खंडहरों पर कच्ची ईंटों से बौद्ध स्तूप का निर्माण किया गया था, और पूर्व में, सिंधु नदी के किनारे फैले निचले शहर के खंडहर। यहाँ इमारतें एक दूसरे को समकोण पर काटते हुए सड़कों के किनारे बनी हैं, जो शहर की योजना का एक अत्यधिक व्यवस्थित रूप है जिसमें स्वच्छता और जल निकासी की व्यवस्था भी शामिल है।

मानदंड (ii): मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक अवशेष भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्राचीन नियोजित शहर हैं, और इनका भारतीय प्रायद्वीप में मानव बस्ती के बाद के शहरीकरण पर बहुत प्रभाव पड़ा।

मानदंड (iii): सिंधु घाटी में तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के सबसे प्राचीन और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित शहरी खंडहर के रूप में, मोहनजोदड़ो सिंधु सभ्यता का असाधारण प्रमाण है।

अखंडता

मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक खंडहरों में 240 हेक्टेयर में फैली पकी हुई ईंटों की संरचनाएँ शामिल हैं, जिनमें से 1922 के बाद से केवल एक तिहाई की ही खुदाई की गई है। संपत्ति की सभी विशेषताएँ उचित संरक्षण और सुरक्षा के लिए स्थापित सीमाओं के भीतर हैं। सभी महत्वपूर्ण विशेषताएँ अभी भी मौजूद हैं और उनका उचित रखरखाव किया जाता है। हालाँकि सिंधु नदी के जल स्तर में वृद्धि के कारण संपत्ति की नींव खारे पानी की क्रिया से खतरों में है। यह 1970 के दशक में यूनेस्को के अंतर्राष्ट्रीय अभियान का विषय था, जिसने मिट्टी की ईंटों से बनी इमारतों पर हमले को आंशिक रूप से कम किया।

सत्यता

मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक खंडहर सिंधु सभ्यता के पहले महान शहरी केंद्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो 5000 साल पहले जली हुई ईंटों से बनी संरचनाओं के साथ बनाया गया था। यह संपत्ति अपनी योजना, रूप और डिजाइन, सामग्री और स्थान के माध्यम से अपने उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य को व्यक्त करना जारी रखती है। संपत्ति की सेटिंग इसके आसपास के विकास के प्रभाव के प्रति संवेदनशील है।

संरक्षण और प्रबंधन आवश्यकताएँ

मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक अवशेषों को क्षति, लूटपाट और संधमारी के खतरों से और संपत्ति की सीमाओं के भीतर और आसपास के नए विकास से पुरावशेष अधिनियम 1975 सहित राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कानूनों के तहत संरक्षित किया जा रहा है। संपत्ति का प्रशासन करने, उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य रखने वाली विशेषताओं की रक्षा और संरक्षण करने और ऊपर उल्लिखित संपत्ति के खतरों और कमजोरियों को दूर करने के लिए एक प्रबंधन प्रणाली है। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक क्षेत्र की वास्तविक सीमा की पहचान करने के लिए पाकिस्तान सरकार के पुरातत्व और संग्रहालय विभाग द्वारा एक व्यापक मास्टर प्लान तैयार किया गया है। हालाँकि मास्टर प्लान के अनुमोदन की प्रक्रिया के दौरान, मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक क्षेत्र को संघीय पुरातत्व विभाग से संस्कृति विभाग, सिंध सरकार को स्थानांतरित कर दिया गया है। संविधान अधिनियम 2010 (18वां संशोधन) के तहत, संस्कृति विभाग, सिंध सरकार अब संपत्ति के उचित रख-रखाव के लिए जिम्मेदार है

IV. निष्कर्ष

प्रामाणिकता और अखंडता के कथनों में उल्लिखित संभावित कमजोरियों से निपटने के लिए एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला द्वारा समर्थित एक साइट कार्यालय है, जो पारंपरिक तरीकों से वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण और अन्य समस्याओं से निपटता है। नमक की क्रिया, तापीय तनाव और बारिश की समस्याओं को मिट्टी के घोल, मिट्टी के आवरण, पुनः-बिंदुकरण और अन्य समेकन कार्यों जैसे कि

संपत्ति की प्रामाणिकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए अंडर-पिनिंग के उपयोग को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से निपटाया जाता है। उपरोक्त खतरों के अलावा बाढ़ का खतरा भी है, जिसे तटबंधों और स्पर के निर्माण से कुछ हद तक कम किया गया है। हालाँकि, बाँध के ऊपर की ओर टूटने से भयावह क्षति हो सकती है। इसलिए विभाग बाँध की नियमित निगरानी कर रहा है और इसे मजबूत करने के लिए सरकार, गैर सरकारी संगठनों और अन्य दाता देशों से सुरक्षित धन की मांग कर रहा है।[13]

संदर्भ

1. Habib 2002, पृ° 44.
2. ↑ Wright 2009, पृ° 10.
3. ↑ Habib 2002, पृ°प° 13-14.
4. ↑ Law 2008, पृ° 83.
5. ↑ Ludvík 2007, पृ° 11-13.
6. ↑ Giosan et al. 2012.
7. ↑ Rao 2005.
8. ↑ Dikshit 2013.
9. ↑ Sarkar 2016.
10. ↑ "We Are All Harappans Outlook India". मूल से 5 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 अगस्त 2018.
11. ↑ "Why Hindutva is Out of Steppe with new discoveries about the Indus Valley people". मूल से 24 जनवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 सितंबर 2018.
12. ↑ कोठारी, देव (2019). सामाजिक विज्ञान >विश्व की प्राचीन सभ्यता. जयपुर: राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल जयपुर. पृ° 3.
13. ↑ "The Indus Civilization | Silk Roads Programme". en.unesco.org. अभिगमन तिथि 2021-02-19.



Impact Factor:
7.569



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details